A Minor Research Project on

प्रभा खेतान कृत उपन्यास छिन्नमस्ता में चित्रित विभिन्न नारी समस्याऐं

Submitted by

:

DR. ANGEL C. JOHN

Assistant professr in Hindi

Al-Ameen Collage, Edathala

Aluva-683561

Ernakulam, Kerala

MRP(H)1361/13-14/KLMGO70/UGC-SWRO

Submitted to:

The Deputy Secretary

University Grant commission

South Western Regionl Office

Bangalore

भूमिका

वर्तमान समय में नारी जागरूकता, नारी सशक्तीकरण व नारी की वास्तविक की स्थापना हेतु विभिन्न कार्य सरकारी व निजी संस्थाओं सामाजिक स्तर पर और देश के स्तर पर लगभग समस्त नारी- जाति पर पड़ रहा है। नारी उत्थान के क्षेत्र साहित्य की विभिन्न विधाओं की तुलना में उपन्यास एक एसी विधा है। जो जीवन की समग्रता से गुज़रता है। जिसमें जीवन का हर छोटा बड़ा पहलू अपनी पूर्णता की साथ अभिव्यक्ति के पाता है। इस उपन्यास में नारी को अपनी जीवन को जिन समस्याओं को सामने करना पड़ता है उसी के बारे में विस्तृत चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पाँच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में प्रभा खेतान का व्यक्ति एवं कृतित्व के बारे में विवेच्य प्रस्तुत किया है। द्वितीय अध्यय में छिन्नमस्ता में चित्रित नारी पात्र में नारी के विभिन्न रूपों के बारे में विस्तृत चर्चा की गयी है। तृतीय अध्याय छिन्नमस्ता में चित्रित नारी शोषण के विभिन्न आयेगा में नारी के साथ हुए विभिन्न शोषणों के बारे में वर्णन किया है। चतुर्थ अध्याय में नारी की विभिन्न सघर्ष के बारे में चर्चा प्रस्तुत किया गया इसमें नारी को अपने जीवन में जिन जिन समस्याओं को सामने करना पडता है उसी के बारे में विस्तृत विवरण प्रस्तृत किया गया है। पंचम अध्याय में प्रभा खेतान कृत छिन्नमस्ता : भाषा शीर्षक में देशज, विदेशी, लोकोक्तियँ तथा मुहावरे, रिश्ते नाते शब्द, गलियाँ आदि के बारे में विश्लेषण प्रस्तृत किया है।

प्रस्तृत शोधकार्य़ प्रभा खेतान के अन्यास में चित्रत नारी में मेरी अल्पमति के कारण होनेवाली तृटियों केलिए में क्षमा प्रार्थि हूँ। इन तृटीयों को सुधारकर अपने आशीर्वाद से कृपया मुझे कृतार्थ कीजिए. मित्रों द्धरा समय -समय पर मिलने वाले प्रोत्साहन केलिए कृतज्ञता प्रकट करती है। विशेष रुप से शालिनी पी. जिन्होंने मुझे उस शोध कार्य संपन्न करने केलिए प्रोत्साहन और सहायता की है उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करती है।

SUMMARY

छिन्नमस्ता प्रभा खेतान स्त्री जीवन की बिडम्बनाओं, उराके शोषण,उत्पीडन और सधर्षों का जीवन्त दस्तावेज़ है प्रभा खेतान का उपन्यास- छिन्नमस्ता। उपन्यास की केन्द्रीय पात्र प्रिया का सृजन करते हुए प्रभा जी ने खूबी के साथ यह स्थापित दिया है कि स्त्री चाहे तो सम्पूर्ज विषम परिस्थितियों और विडम्बनाओं को लाँघकर अपने लिए ऐसा मार्ग तलाश सकती है जो उसे सफलता के शीर्ष तक ले जाए। प्रिया धीरे बड़ी हो रही है और परिस्थितियों को समझने लगती है। स्कूल में बहनजी और घर में दाई मां के प्यार में वह अपने आपको सुरक्षित महसूस करने लगती है। बड़े भाई से बचाने केलिए वह एक पुरुष की ज़रूरत महसूस करती है। लेकिन अपने भाई वाला धटना ढाई में से अलवा किसी से नही बनता सक्ती थी। अंत में प्रिया अपने भाई से आत्महत्या करने की धमकी देती है। पहले बड़े भाई से सुरक्षित हो जाती है।छिन्नमस्ता कि प्रिया कॉलेज के प्रोफेसर मुखर्जी से प्रेम करती है। मुखर्जी प्रिया से शादी के वादे करता है। उसके साथ शारीरिक संबन्ध की रखा है। लेकिन उसे धोखा दिया है। वह चोरी से दूसरी लड़की से शादी करता है। यहाँ प्रेम का आकर्षण समाप्त हो जाता है। शादी के बाद प्रिया को अपनी पति के साथ निरंतर संघर्ष करनापड़ती है। प्रिया को अपनी पति से दुष्कार, घृणा मिलती है। प्रया अपने जीवन में पहले अपने बड़े भाई से शादी के बाद के पति से फिर बारह वर्ष के बेटे का त्याग किया जाता है।

यह उपन्यास शोषित महिलाओं केलिए प्रेरक है। ।अंत में उसे सुरक्षा मिलती है। लेकिन वह कहीं बाहर नहीं, अपने अंदर अपने आप में।

छिन्नमस्ता युगों से प्रताडित नारी के शोषण के विविध आयामों को परत-दस्परत उघाडनेवाला उपन्यास है। जो यह रेखाकित करता है कि घर की सुरक्षित

दीवारों के पीछे भी नायिका प्रिया की अस्मत लूट ली जाती है। घर के सीमित दायरे से मुक्त हो अपने सपना को सूदूर क्षितिज तक विस्तृत का सघर्ष स्पन्न है-छिन्नमस्ता